

सम्मर्दन पुं. (तत्.) 1. संघर्षण, रगड़ने की क्रिया
2. मर्दन करना, रौंदना वासुदेव का एक पुत्र,
विद्याधरों का एक राजा।

सम्मर्दी वि. (तत्.) मर्दन करने वाला, रौंदने या
कुचलने वाला, रगड़ने वाला, संघर्षण करने
वाला।

सम्मातृ वि. (तत्.) 1. जिसकी माता पतिव्रता हो,
सती माता, वाला 2. नाप-जोख करने वाला।

सम्माद पुं. (तत्.) उन्माद, पागलपन, उन्मत्त,
मद।

सम्मान पुं. (तत्.) आदर, इज्जत, प्रतिष्ठा, मान।
किसी के प्रति मन में उत्पन्न आदर का भाव।

सम्मानन पुं. (तत्.) आदर करना, सम्मान करना।

सम्मानना स्त्री. (तद्.) आदर करना, सम्मान करना।

सम्मानसूचक वि. (तत्.) किसी के प्रति सम्मान
प्रकट करने के सूचक, जिससे दूसरे के प्रति
सम्मान प्रकट होता है।

सम्मानार्थक वि. (तत्.) दे. सम्मानसूचक।

सम्मानित वि. (तत्.) जिसका सम्मान किया गया
हो, आदृत, समादृत।

सम्माननी वि. (तत्.) आत्म सम्मान वाला, जिसमें
आत्म सम्मान का भाव हो।

सम्मान्य वि. (तत्.) सम्मान के योग्य, आदरणीय,
सम्माननीय।

सम्मार्ग पुं. (तत्.) सत् मार्ग, अच्छा मार्ग।

सम्मार्जक वि. (तत्.) सफाई करने वाला, झाड़ने-
बुहारने वाला पुं. (तत्.) झाड़ू, मेहतर।

सम्मार्जन पुं. (तत्.) 1. साफ-सफाई करना, झाड़ना-
बुहारना 2. सुरवा के साथ काम आने वाला कुश
का मुट्ठा।

सम्मार्जनी स्त्री. (तत्.) झाड़ू, बुहारी।

सम्मार्जित वि. (तत्.) अच्छी तरह सफाई करना,
झाड़ना-बुहारना, नष्ट किया हुआ, साफ किया
हुआ।

सम्मित वि. (तत्.) 1. मापा हुआ, परिमाण, समान
माप 2. सदृश, एक जैसा, अनुरूप, समान 3.
जिसके अंगों में आनुपातिक एकरूपता तथा
सामंजस्य हो।

सम्मिति स्त्री. (तत्.) बराबरी, तुलना करना,
महत्वाकांक्षा।

सम्मिलन पुं. (तत्.) 1. मिलना, एकत्र होना, मेल-
मिलाप 2. दो इकाइयों का मिलकर एक होना 3.
सम्मेलन।

सम्मिलनी स्त्री. (तद्.) सम्मेलन।

सम्मिलित वि. (तत्.) साथ मिला हुआ, एकत्र,
किसी के साथ मिला हुआ या मिलाया हुआ, जो
मिल-जुल कर किया गया हो, सामूहिक।

सम्मिश्र वि. (तत्.) मिश्रित, आपस में मिला हुआ,
संपन्न।

सम्मिश्रक पुं. (तत्.) वह व्यक्ति जो किसी प्रकार
का सम्मिश्रण करता हो वह व्यक्ति जो
औषधियों आदि के मिश्रण प्रस्तुत करता हो
compounder

सम्मिश्रण पुं. (तत्.) 1. मिलाने की क्रिया, मेल,
मिलावट 2. औषध तैयार करने के लिए कई
प्रकार की औषधियों को मिश्रित करना।

सम्मीलन पुं. (तत्.) 1. पुष्प आदि का संकुचित
होना, मुँदना 2. ढका जाना 3. सूर्य या चंद्रमा
का पूर्ण ग्रहण, खग्रास।

सम्मुख अव्य. (तत्.) सामने, समक्ष, अभिमुख वि.
जो आँखों के सामने उपस्थित हो, किसी बात
पर स्थिर, उपयुक्त।

सम्मुखी पुं. (तत्.) दर्पण, आइना टि. जो सामने
हो, सम्मुख रहने वाला।

सम्मुखीन वि. (तत्.) जो सम्मुख हो, सामने का,
अनुकूल, शुभ।

सम्मूढ वि. (तत्.) 1. संज्ञाहीन, मूर्ख, मूढ़बुद्धि,
ज्ञानहीन 2. मोह में पड़ा हुआ 3. ढेर के रूप में
लगा हुआ, राशीकृत 4. भग्न, टूटा हुआ।